१ त्याज्या न भव्येन : स्वर्ग मोक्षाभिलाषिणा ओं
ह्रीं परब्रह्मणो उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः ॥ उत्तम
मधमद्दव्य अज्जसच्चउ ॥ पुरा सजच्च संयमद्द
अज्जसच्चउ ॥ पुसो रा सऊच्च संयमस्त्तउ ॥
चउ वि आकिंचन भव भय वंचनु वंभचेरु धम्म
जि अस्कउ ॥ अर्घ ॥ उत्तम क्षमा ॥ १ ॥ मार्दव ॥ १
आर्जव ॥ १ ॥ सत्य ॥ १ ॥ शौच ॥ १ ॥ संयम ॥ १ ॥ सुतप ॥
१ ॥ त्याग ॥ १ ॥ आकिंचन्य ॥ १ ॥ ब्रह्मचर्य ॥ अर्घ ॥
इस भांत दस लाक्षनक न्यारे न्यारे ॥ अपने दसल

॥श्रीजिनायनमः॥ मूल॥ येन केनापि दुष्टेन पीडिते
नापि कुत्रचित्॥ क्षमा त्याज्या न भव्येन: स्वर्ग
मोक्षाभिलाषिणा॥ अर्थ॥ जो काहू दुष्ट कर पीडि
त हुवो संतो स्वर्ग मोक्ष को वांछक भव्य जीवकं
र क्षमा है सो नहीं छोड़ना योग्य है॥ मूल॥ ओं ह्रीं
परब्रह्मणो उत्तिम क्षमा धर्मांगाय नमः॥ अर्घ॥
ऐसें न मत्रांन उत्तम क्षमा धर्मांग के निमित्त हमा
रो नमस्कार है सो होहु॥ मूल॥ उत्तम मधयेन
केनापि दुष्टेन पीडिते नापि कुत्रचित्॥ क्षमा-

गाइ दुहाइ॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो गुण समूह
की सहकारी है॥ उत्तम क्षमा के समीप गुणों के स
मूह आय रहत है॥ मूल॥ उत्तम खम बुह यणि
चिंता मणि॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो पंडित पु
रुषो को चिन्ता मन रत्न है॥ मूल॥ उत्तम खम सं
पज्जइ थिर मन॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो मन
थिर होय है॥ मूल॥ उत्तम खम महणिज्ज सय
लजन॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो सर्व सज्जन
समूह कर पूजनीक है॥ मूल॥ उत्तम खम मद्दं

क्षमा को धरै ॥ इस प्रकार धर्म है ॥ सो संसार
को नाश करनहार है ॥ और सदा शास्वत है ॥
इस दस प्रकार धर्म विषै प्रथम क्षमा रूप पर
म धर्म को लक्षणा वा फल वा स्तवन वर्णन को
जे है ॥ मूल ॥ उत्तम खम तिल्लोयहु सारो ॥ अर्थ ॥
उत्तम क्षमा धर्म है सो तीन लोक विषै सार है
॥ मूल ॥ उत्तम खम जंजं जम्मं दुहि तारो ॥ अ
र्थ ॥ फेर उत्तम क्षमा धर्म है सो संसार समुद्र
को उतार है पार करै है ॥ मूल ॥ उत्तम खिंबहु म

२ हिये ॥मूल॥ जहां अममकोहि न उव्हसिज्जइ ॥अर्थ॥ जह असमर्थ गरीव अपने आधीन जीव सेती रुठिये नहीं ॥मूल॥ सोउ जहीं आकोसउ वाहिन साहिज्जइ ॥अर्थ॥ जहां आक्रोश वचन दुर्वचन खोटे वचन साहिये ॥ जिहि पर दोसणु जणु भासिज्जई ॥अर्थ॥ जहां निज आत्मीक दर्शन ज्ञान चेतना के चिंतन विषे मन धरिये ॥मूल॥ तहि उत्तम जनेन कहिज्जइ ॥अर्थ॥ तहां उत्तम क्षमा जनेश्वर देवन कर कहिये है ॥

तमहां मणि ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा सो मिथ्या
त्व अंधकार दूर करवे को महां उद्दोतमान मणि
समान है ॥ जिस उत्तम क्षमा को ऐसो वड़ाई है मु
नि महिमा करत हैं ॥ सो उत्तम क्षमा कैसे उपजे
है ॥ शिष्य ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर अब गुरु
महाराज आगे कहे हैं ॥ मूल ॥ जिस असमर्थ
है दोस खिमि जई ॥ अर्थ ॥ जहां असमर्थ
जीवों सेती कोई दोष तकसीर भई ताकी क्षमा
कीजे ॥ सांत परनाम राखिये सो उत्तम क्षमा

४ गणीस अनंता ऋषि प्रधान ऋषीं वीश्वर
हैं ते सिद्ध पद को प्राप्त होइते ॥ मूल ॥ श्लोक ॥
मृदुत्वं सर्व भूतेषु कार्य जीवेन सर्वदा ॥ का
ठिण्यं त्यज्यते नित्यं धर्म बुधि विजानता
॥१॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणो उत्तम मार्द्दव धर्मांगा
यनमः ॥ अर्थ ॥ धर्म बुद्धि के जाननहारे भव्य
जीव कर सर्व जीवा विषय कोमल परनाम
है सो सर्व काल करने योग्य है ॥ और कठोर
परनाम है सो नित्य ही छोड़ने योग्य है । ऐसे

Ganes[illegible] Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ घत्ता मूल ॥ इम उत्तम खम मणुय नर सुयर वग
गुय केवल नानु लैहे विथिरु ॥ अर्थ ॥ इस भांत
उत्तम क्षमाकर संयुक्त पुरुष है ॥ सो मनुष्य देव
विद्याधरो कर स्तवनीयहु ॥ उसंतो थिरो भ
त केवलज्ञान है ताहि प्राप्त होइ ॥ मूल ॥ करः
हुइ सिद्धु निरंजनः भव दुह भंजनः अगणिय थी
से हुंग मज्झि थिरु ॥ अर्थ ॥ संसार दुःख को नास
करणा समर्थ कर्म कलंक कर रहित सिद्ध महरा
ज होइ है ॥ और सही उत्तमा गुन के प्रभाव कर भ

५ गुन गन सारउ ॥ अर्थ॥ गुणांके जे समूह तिन विषै सार है॥ मूल॥ तिस हूवउ संयमु सहलु॥ अर्थ तिस मार्दव धर्म कर सहित व्रत और संयम हैं ते सफल है॥ मूल॥ मद्दव माणा कसाय विभंडनु॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म है सो मान कषाय को विशेष कर खंडन वालो है॥ पांचौ इंद्री और मन वस होय है॥ मूल॥ माद्दव धर्महि करुना वल्ली॥ पसरइ चित महीहि णवल्ली मार्दव धर्मकर चित्त रूपी पृथ्वी विषै करुना मई नवीन

महान मार्द्दवरूप अंग है ताके निमित्त हमारो धर्म
नमस्कार है सो होउ ॥ मूल ॥ मार्द्दव भव मद्दनु
॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है सो संसार को मर्दन वा-
लो है ॥ नासकरनेवालो है ॥ मूल ॥ माण रोग कं
दणु ॥ अर्थ ॥ मानकषाय को अतिसय करना
श करने को समर्थ है ॥ मूल ॥ दयाधम्मह मुल जि
विमलु ॥ अर्थ ॥ दयामूल को धर्म है और
विमल कहिये निर्मल है ॥ मूल ॥ सव्वहं हिय
पारउ ॥ अर्थ ॥ सर्व जीवों को हितकारी है ॥ मूल ॥

रोहइई ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म कर मनुष्य समू
ह को वैर भाव है सो दूर होइ है ॥ मूल ॥ माद्दवे
ण परिणाम विशुद्धी ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म क
र परणामों की विशुद्धता होइ है ॥ क्रोध मा
न माया लोभ रूप कषाइ है ते मंद होइ हैं ॥ इ
लुको: होहिं हैं ॥ जुह भावार्थ है ॥ मूल ॥ माद्द
वेण विहु लोयहु सिद्धी ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म
कर दोउ लोक सौं भव सुधो है ॥ इस भव अ
रु परभव में मनो वांछित फल होइ है ॥ मूल ॥

वेलहैसो पेड़हैं फलहै॥ मूल॥ मार्दव जि
नवर भातिययासई॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म है
सो श्री जिनवर देवकी भक्ति को प्रकाशक
रे है वड़ावे है हढ़ावे है॥ मूल॥ मार्दव कुम
इ पैसरु णणासप॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म कर
कुमत के विस्तार को अतिशय करनासुरो
ये है॥ मूल॥ माद्दवेरा वहु विण उप वड़ढइ
॥ अर्थ॥ मार्दवं धर्म कर वहुत विनय कर
प्रवर्त्ति होय है॥ मूलं॥ माद्दवेन जनवैइ

कौ स्वरूप है सो प्रति भासै है जानियै है ॥ मूल ॥ मा
द्दव दोष अशेष निवारण ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है
सो सव धर्म को दूर करे है ॥ मूल ॥ मद्दव जनन स
मुद्दो तारउ ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है सो संसार समुद्र
को पार करे है ॥ घत्ता ॥ सम्यदं सनु अंगु मद्द
व परनामु जिमुणहु ॥ अर्थ ॥ भो भव्य जीव हो तु
म जो हौ ते मार्दव धर्म रूप परनाम है ताहि सम्य
ग्दर्शन को अंग जानो ॥ मूल ॥ इय परग्र विचि
ती ॥ अर्थ ॥ इस भांति पूर्वोक्त अतिशय वान मार्द

माद्दवेणा दो बहुतउ सोहई॥ अर्थ॥ मार्दवध
र्म कर सहित बाह्य भ्यांतर दोइ प्रकार तप है
सो सोभे है॥ मूल॥ माद्दवेणा ति जउ जिन
हु मोहइ॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म कर तीन जगत के
जीव हैं ते अतिशय कर मोहे हैं प्रीति करे हैं।
मूल॥ माद्दव जिनसासणु जाणिज्जइ॥ अर्थ
मार्दव धर्म कर जिन धर्म. जिन मत है सो
जानो जाइ है॥ मूल॥ अप्पा परिसरु भासि
ज्जइ॥ अर्थ॥ फेर मार्दव धर्म वा आपु को औ

है सो न कर्त्तव्या नहीं करनो ॥ मूल ॥ ॐ ह्रीं परम ध
र्मरो उत्तिम आर्यव धर्मांगाय नमः ॥ अर्थ ॥
ऐसे महान आर्यव धर्मरूप अंग के निमित्त
हमारो नमस्कार है सो होहु ॥ मूल ॥ धम्म हु
वरलखणु अजव थिरु मनु ॥ अर्थ ॥ आर्ज
व धर्म है सो धर्म को श्रेष्ठ लक्षण है ॥ और
आर्यव धर्म वर मन है सो थिर होइ है ॥ मूल ॥
दुरिय विहंमणु सुहजणणु ॥ अर्थ ॥ फेर आ
र्जव धर्म है सो पाप को नास करन वालो है ॥

व धर्म को स्वरूप वा फल है ताहि अपने विषे जा
नकर ॥ मूल ॥ मद्दव धम्म अमलु थुणहु ॥
अर्थ ॥ निर्मल मार्दव धर्म है ताहि स्तुति करो ॥
मूल ॥ आर्यत्वं क्रियते सम्यग्दृषबुद्धि ख्याति
ज्यते ॥ पापचिन्ता न कर्तव्या श्रावक धर्म चिं
तकै ॥ अर्थ ॥ धर्म चिंतकैः श्रावकैः ॥ कहिये
धर्म के चिंतक श्रावक हैं तिनकर आर्यत्वं करि
ये है करिये है ॥ दुःषबुद्धि सब कहिये ॥ फेरि दु
षबुद्धि है सो सम्यक् नित्य ने कहिये पाप चिंता

पने चित्त विषैं चिंतिये ॥ मूल॥ तारिसु अन्नह
पुनु भासिज्जइ ॥ अर्थ॥ जैसो अपने चित्त विषैं
चिंतिये ॥ मूल॥ तारिस अणह पुणु भासिज्ज
इ ॥ अर्थ॥ फेर तैसो ही औरों को कहिये ॥ मूल
किज्जई पुणु तारिस सुह संचणु ॥ अर्थ॥ फेर जै
सो ही कहिये तैसो ही शुभ पुण्य को संचय की
जिये ॥ मूल॥ तं अज्जउ गुणु मुनहु अवंचनु ॥
अर्थ॥ भो भव्य हो तुम तें हीं आर्यव धर्म जा
नो कैसे कहिये ॥ आर्जव धर्म अवंचन को है

औरसुखकोउपजावेहै ॥मूल॥ तंभणुजिकिजइ ॥अर्थ॥ सो आर्जव धर्म इस प्रकार कीजें ॥मूल॥ तंपात्लिज्जइति ॥अर्थ॥ तश्रार्जवधर्म को पालिये ॥मूल॥ तब्भसनज्जइ ॥अर्थ॥ फेर आर्जवधर्म है ताहि स्तु नियै ॥मूलु॥ खयजराणु ॥अर्थ॥ तातें संसार को नाम होइ ॥ अथवा रेसो अंथ कीजें कैसो कहे ॥आर्यव धर्म नास करैहो॥ संसार जाधर्मकर ऐसो है ॥अर्यव धर्म॥ मूल॥ जारिसुराय विपिंक्त विंतजइ ॥अर्थ॥ जैसें अ

फलरहित है॥ अर्थ॥ अज्जव शिवपुर पंथहु सचहु॥ अर्थ॥ आर्जवधर्म है सो मोक्षधर्मकौ साधक है॥ जिस आर्जव धर्मको बड़ाइ ऐसो करी सो आर्जव धर्म कैसे उपजै है॥ शिष्य ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर श्रीगुरु कहे हैं॥ मूल॥ जिहु कुडिल परणामउ चईज्जई॥ अर्थ॥ जहां कुटिल परनाम छोड़िये॥ मूल॥ तह अज्जउ धम्मु जि संपज्जई॥ अर्थ॥ तहां आर्जव धर्म है सो उपजे है॥ मूल॥ दंसण नाण सरूव अखंडो॥ अर्थ॥

ये माया कषाय कर रहित है। दगाबाजी ठगई कर रहित है ॥ मूल ॥ माया मनहु नीनीसरहु ॥ अर्थ ॥ माया कुटिलाई रूप शल्य है ताहि अपने मन तें निकासो दूर करो ॥ मूल ॥ अजउ धम्मु चित्त विया रहु ॥ अर्थ ॥ कुटिलाई रहित पवित्र आर्यव धर्म है ताहि विचारो ॥ चिन्तवन करो ॥ मूल ॥ वउ तउ माया वियकुण करं ॥ अर्थ ॥ व्रत और तप हैं सो माया चारी दगाबाज पुरुष के निर्थक है

११ धम्मु इंलब्भइ ॥ अर्थ ॥ सोभी शुद्ध आत्मी
क परनाम आर्जव धर्म के प्रताप कर पाइये है
॥ मूल ॥ आज्ज वेण वई रिय मणु खुब्भइ ॥
अर्थ ॥ आर्जवधर्म कर वैरी को मन क्षोभ को मा
म है सो होइ है ॥ वैर भाव कर रहित होय है ॥ घत्त
मूल ॥ अज्जउ परम प्पु उगय संकप्पउ ॥ अर्थ
आर्जव है सो परमात्मा है ॥ और दूर भए हैं स
कल्प विकल्प जाल सरूप भाव जातें ऐसा है ॥
मूल ॥ विंमुति जि सासंउ अभउ ॥ अर्थ ॥ फेर

जो दर्शन ज्ञान स्वरूप है और खंड रहित है ॥ मू
ल ॥ परम अतिंद्रिय सुख करंडो ॥ अर्थ ॥ जो
उत्कृष्ट अतिंद्रिय निज आत्मीय सुख को क
रे है करंडो कहा पिटारो है ॥ मूल ॥ अप्पई
आपइ भावत्तरंडो ॥ अर्थ ॥ जो आप कर आ
प ही संसार समुद्र को तारे है ॥ मूल ॥ एरि सेच
यनं भाव मयंहो ॥ अर्थ ॥ ऐसो जो आत्मा को
प्रचंड प्रबल कषाय रहित सुद्ध निज दर्शन
ज्ञान सरूप परनाम है ॥ मूल ॥ सो परा अज्झप

भव्य जीव हैं ताकर असत्य कहिये॥ असत्य
वचन है सो सर्वथा कहिये॥ सर्व प्रकार कर त्या
ज्यं कहिये छोड़ने योग्य है॥ अर्थ च पुनः फे
र कहिये पर निंदा कहिये है सो सर्वदा कहिये
सर्व काल विषे न कर्तव्या कहिये नहीं करनी॥
अप कहिये निश्चयक॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणे
उत्तिम सत्य धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसो महां उ
त्तिम सत्यं धर्मांग के निमित्त हमारो नमस्कार
है सो होहु॥ मूल॥ दया धर्म कुं कारन दोस निवा

आर्जव धर्म है सो कहे चिन्मूर्त्ति है दर्शनज्ञान
की मूर्त है ॥ और भयरहित है ॥ मूल ॥ तें भि
झा इज्जई संसउहिज्जइया विज्जइ जो अच
लपउ ॥ अर्थ ॥ तिस आर्जव धर्म को ध्याइये ॥
और संसार छांड़िये ॥ फेर आर्जव धर्म के -
ध्याणतें अचल पद है ॥ सदा सास्वतो है मु
तं पद है ॥ मूल ॥ श्लोक ॥ असत्यं सर्वथा त्या
ज्यं दुष्ट वाक्यं च सर्वदा ॥ पर निंदा न कर्तव्या
भवे नाधिच सर्वदा ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ भव्येन कहिये

गरुडवडु वियान ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो पृथ्वी मंडल
विषैं गरुड़ विधान है ॥ मूल ॥ सच्चंजि संसार समुद्द
सेतु ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो संसार समुद्र के उतारवे
को याजवंध है पुल समान है ॥ मूल ॥ सच्चु जि भव्वहं
मण सुहकेंहेउ ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो भव्य जीवों
के मन को सुख कारण है ॥ मूल ॥ सच्चेण जि सोहई
मणुयजम्म ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर मनुष्य है सो सो
भे है ॥ मूल ॥ सच्चेणा पवित्तउ पुण काम असत्य
धर्म करि पुण्य है सो प्रवर्त्ते होइ है ॥ मूल ॥ सच्चे

रणा इहि भव पर भव सुह कय रुस च्चु जिण वयणु लुउ भुवणा ।। अतुल्लउ । बोलिज्जइ । वीसास घरु ।। अर्थ ।। दया धर्म को कारण दोषों को निवारण दूर करन वालो है ।। इस भव पर भव विषै सुख को करन वालो है ।। तीन लोक विषैं जाके समान और नहीं ।। और जो विश्वास को घर प्रतीत को मंदिर ऐसी अनेक उपमा को धरे उत्कृष्ट सत्य वचन है सो भव्य जीवों कर बोलिये हैं ।। मूल ।। सव्व जि सव्वहं धम्मु पहाणु ।। अर्थ ।। सत्य धर्म सो सर्व धर्म विषैं प्रधान है ।। मूल ।। सव्वु ज्ज महियलु

है सो यालिये है ॥मूल॥ जंखन फिटइ संसार
क्षत ॥ अर्थ॥ जिन तीनों गुण के पाले तैं संसार
संबंधी पीड़ा हो सो एक छन में दूर होइ है ॥ध
त्ता मूल॥ सच्चु सुधर्म फलेन केवल नानलं हे
इ जन ॥ अर्थ॥ सत्य धर्म को फल कर भव्य सम्य
क् है सो केवल ज्ञान है ताहि प्राप्त होइ है ॥ मूल॥
तं पालहि भो भव्व इव्व ॥ भराहुम ॥ आलिंय उ
इ रुवयरा ॥ अर्थ॥ भो भव्य जीव हो ॥ ऐसो स
त्य धर्म है ताहि पालहु ॥ और इस मनुष्य जन्म

नस पल्ल गुण गण सर्कंति ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर
सकल गुण के समूह सोहे है ॥ एकठे होय हैं सत्य
वादी पुरुष विषें आपये रहे हैं ॥ मूल ॥ सच्चे मति
य ससंवा वहंति ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर देव हैं ते
सेवा करे हैं ॥ मूल ॥ सच्चे न अनु व्वई महवया
पी ॥ सत्य धर्म कर असिज्जई निविभास हित
रूप मंर्यादि रूप वचन है सो भव्य जीवों कर नित्य
हीबोल ॥ मूल ॥ पन्न विभासिज्जय परकुहपि
यास ॥ अर्थ ॥ परको अंहित रूप अमर्यादि गुस

१५ अभंगो भिरांगो उवउगा जुउं ॥ जरा मरण विनाश
नत्ति जय पयासन झाइज्जइ ॥ अहि निसजु धउ ॥
अर्थ ॥ जो शोच धर्मांग भंग कर रहित हैं अखंड है ॥
फेर अंग सेती न्यारो है ॥ फेर उपयुक्त कर संयुक्त है ॥
जो जरा मरन के विनास कर समर्थ है ॥ और जो तीन
जगत विषें प्रकाश करने को समर्थ है ॥ ऐसो भवशा
श्वतो महान सौच धर्म है सो दिन रात विषें निरंतर
चिंतवन कीजिये ॥ मूल ॥ धंम्म सउच्च होइ मन सुद्ध
॥ अर्थ ॥ ए मन की शुद्धता कर शौच धर्म है सो होइ है.

विषैं झूंठौ वचन है ताहि मत बोलो ॥ मूलश्लोक ॥
बाह्याभ्यंतरेणापि मनोवा ॥ क्कायशुद्धिभिः सु
चित्तेन सदा भाव्यं पापभीतैः ॥ सुश्रावकै ॥ अर्थ ॥
बाह्य अभ्यंतर कर और मन वच काय की शुद्धता
कर पापतैं डरपे श्रावक हैं तिन कर सर्व विषैं भलो
चित्त कर पाप रहित चित्त कर भावनो योग्य है ॥ मूल ॥
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणो उत्तम सौच धर्मांगाय नमः ॥ अ
र्थ ॥ ऐसो महान शौच धर्मांग के निमित्त हमारो न
मस्कार है सो होहु ॥ मूलं ॥ सउच्चु जु धम्मंगा तेज़ि

जिन आगमके पटवेतैं शौचधर्म है सो होइ है ॥मू
ल॥ धम्मसउच्चसगुणा अणुमणणो॥ अर्थ॥ गु
णावान पुरुषकी अनुमोदना करेतैं शौच धर्म है सो
होइ है॥ मूल॥ धम्मसउच्चसल्लकयवाये॥ अर्थ॥
माया मिथ्या निदानरूप तीन सल्य के त्याग कर
सौच धर्म है सो होइ है॥ मूल॥ धम्मसउच्चउजु निम
लभाए॥ अर्थ॥ निर्मल भाव होत संते शौच धर्म है
सो होय है॥ मूल॥ धम्मसउच्च कसाय अहावे॥ अर्थ॥
कषाइके अभावतें त्यागतें शौच धर्म है सो होइ है

॥ मूल॥ धम्मसउच्च यवण धण रीद्धण ॥ अर्थ॥ व
चन धन को शूद्ध ताकर शौच धर्म है सो होइहै ॥ मूल॥
धम्मसउच्च लोहवज्जंतउ ॥ अर्थ॥ लोभके त्याग
वंत पुरुषके सौच धर्म है सो होइहै ॥ मूल॥ धम्मस
उच्च सुतव पहिजंतउ ॥ सम्यक्त पश्चरण आचर
णरूप मार्ग चलनवाले भव्य जीवों के शौच धर्म
है सो होइहै ॥ मूल॥ धम्मसउच्च मपट निवारण ॥
अर्थ॥ आठ मद के त्यागते शौच धर्म है सो होइ
है ॥ मूल॥ धम्मसउच्च जिणायम भणने ॥ अर्थ॥

ओवयपासेउ॥ अर्थ॥ मुनि महाराजो को कदाकाल विषै भी जलनरूप शौच धर्म नहीं कह्यो है॥ घत्त मूल॥ भव मुनि वि अनि च्चो धम्मु सउच्चो पालिज्जइ॥ एयगामिनि॥ अर्थ॥ संसारको अनित्य अस्थिर जानकर भो भव्यहो एकाग्रमनकर शौच धर्म है सो पालिये॥ कैसो कहे शौच धर्म॥ मूल॥ सुह मगा सहायउ॥ अर्थ॥ शुभ मार्ग को सहाइ है॥ फेर कैसो कहें॥ मूल॥ सिव पयदाइ॥ अर्थ॥ उ मोक्ष पदको दाई कहै॥ मूल॥ अनुम चिंतहिं किंम परिवारो॥ अर्थ॥

॥मूल॥ धम्म स उच्च न लिप्पइ पावे ॥अर्थ॥ पाप
रूपी लेप के विगर लगवे तें शौच धर्म है सो होइवै
॥मूल॥ अहवा जिनवर पुज्ज विहारो ॥मूल॥ निम्म
ल फांसु पजल कय पएहारो ॥अथवा॥अर्थ॥ और
प्रकार जिनेश्वर देवजू की पूजा विधान विषे निर्मल
प्रासूक नीर करइया सहित होइ ॥ यत्न पूर्व स्थान
करे सो भी शौच धर्म कहिये है ॥मूल॥ तपै स उत्तु
ग्रह छइं भासिउ ॥अर्थ॥ सो जह शौच धर्म ग्रहस्थों
को जिनेश्वर देव कहो है ॥मूल॥ रावि मुनिवर कइं.

एकेंद्री ॥ तीन इंद्री ॥ चौंद्री ॥ पचेंद्री ॥ जीवकों रक्षमारूप प्राण संयमं ॥ इम भांत ॥ दोई प्रकार संयम है कह्यो ॥ मूल ॥ पालनीयं सुचित्तेन भव्य जीवेन सर्वदा ॥ अर्थ ॥ भव्यजीवेन कहिये ॥ भव्यजीव हैं ताकर सुचित्तेन कहिये ॥ पुण्य रूप चित्त कर पालनीय कहिये ॥ पूर्वोक्त दोई प्रकार संयम पालनो योग्य है ॥ मूल ॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणो उत्तम संयम धर्मांगाय नमः ॥ अर्थ ॥ ऐसो महान संयम धर्मांग के निमित्त हमारो नमस्कार है सो होहु ॥ मूल ॥ संयमं जरादुःखहु ॥ अर्थ ॥ संय

भो भव्व जीव हो तुम जु हो सो शौच धर्म विना और कबू भी चिंतवन मत करो॥ क्षण मात्र भी परंतु शौच धर्म है॥ सोई समय समय विषें चिंतवन करो ध्यान स्मरण करो॥ श्लोक॥ संयमं द्वि विधं लोके कथितं मुनि पुंगवैः॥ पालनीयं सुचित्तेन भव्य जीवेन सर्वदा॥१॥ अर्थ॥ मुनि पुंगवने कहिए॥ मुनप्रधान कर श्री जिनेश्वर देव कर लोक कहिए॥ इस लोक विषें संयम कहिये है॥ संयम है सो द्वि विधं कथितं कहिये पाँच इंद्री वसीकरण रूप इंद्री संयम और

पावे॥ आ— नहीं पावे॥मूल॥ संयम पंचेंद्रिय
मनदंडनेन॥अर्थ॥ पांच इंद्री के दंड वेकर बश क
रवेतें संयम है सो होइ है॥मूल॥ संयम जिकसाइ
विहंडणेन॥अर्थ॥ क्रोध मान माया लोभादिक
कषायों के विषं डनकर कषाइ के छोड़ वेकर सं
यमधर्म है सो होइ है॥मूल॥ संयम दुद्दर तंवचा
रणेन॥अर्थ॥ दुद्धरितप आचरणा के धारवेतें संय
मधर्म सो होइ है॥मूल॥ संयम उपवास वियं भणे
न॥अर्थ॥ उपवासों के बढ़ाइवेतें करवेतें सो संयम

मैहैसो मनुष्य को अतिदुर्लभहै ॥ मूल ॥ तं पाविवि लहु जो छंडहु ॥ पुन मूढमइ ॥ अर्थ ॥ ऐसे दुर्लभ संयम को पायकर जो मूर्ख बुद्धी जीव शीघ्रही फेर छोड़ देय हैं ॥ मूल ॥ सो भमई ॥ भमावलि ज्वर मरनावली ॥ अर्थ ॥ सो जीव जरा और मरनी है ॥ पंक जा विषै इसी भावौन् महान् पंक है तिनही में भ्रमे है ॥ अनंत भवों विषैं जरा मरन करनो संतो चारों गत विषैं भटके है ॥ मूल ॥ किम पांवइ सइ पुनु सुगई ॥ अर्थ ॥ संयम छोड़ने वालो जीव है सो सुगति है ताह कहां फेर

वोंकी रक्षाकर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयमसद्ध परिरक्षणेन ॥ अर्थ ॥ जैन शास्त्र अर्थे परीक्षाकर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयमतनजोयन यत्तरोन ॥ अर्थ ॥ योगोके कृषि करवेकर काय योगके वस होवेकर संयम धर्म है ॥ मूल ॥ संयम बुहगमन चयं तरुणा ॥ अर्थ ॥ बहुत गमन के त्याग कर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम अनुकंपकुरांतरुन ॥ अर्थ ॥ जीवों की अनु कंपा दया कर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम पोसइ रंसनु

धर्म होइ है ॥ मूल ॥ संयम मणु पसरहुं थंभणेन
॥ अर्थ ॥ विषय कषाई रूप होइ ॥ फेर मन के रोकवे करि
संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम पुणु कायक
लेसएन ॥ अर्थ ॥ महत्काय क्लेश तपश्चरण क
रवे कर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम परग
ह गहचाहरएन ॥ अर्थ ॥ बाह्याभ्यंतर परिग्रह रूप
पिसाचके त्यागकर संयमधर्म है सो होइ है ॥
इंद्रिय संयम कहि अब प्राण संयम कहे हैं ॥ मूल
संयम तसथावर रक्खणेन ॥ अर्थ ॥ त्रसथावर जो

२१ धर्म विना एक घरी भी मत व्यतीत होउ ॥ मूल ॥
संयम विनु विहली इक जाउ ॥ अर्थ ॥ संयम ध
र्म विना जामे मुख्यायवा है सो विफल है ॥ घत्ता ॥
मूल ॥ इति भव पर भव संयम सारु ॥ अर्थ ॥ इस
भव पर भव विषें संयम धर्म है सो भव्य जीवों को
शरण है ॥ मूल ॥ होजउ जिणणाराणाहे ॥ अर्थ ॥ भो
निउ सो संयम धर्म सर्व जीवों को शरण होउ ॥ सो
धर्मोपि पं देशरूप आशीर्वाद श्री जिनेश्वर देव
जी कर कह्यो है ॥ अथ यंवारे सो अतिशयवान सं

हुएइ ॥ अर्थ ॥ जुइ संयम धर्म है सो सम्यग्दर्शन
को पुष्ट करे है पोषे है ॥ मूल ॥ संयम तिसहु निरमो
रक पंथ ॥ सम्यक्दर्शनि कर राहित संयम धर्म है सो अ
तिशय कर मोक्ष को मार्ग है ॥ मूल ॥ संयम विनु नर
भव सयल सुरा ॥ अर्थ ॥ संयम धर्म विना मनुष्य पद
है सो शून्य है निरर्थक है निष्फल है ॥ मूल ॥ संयम वि
नु दुगांय जिउ पवरा ॥ अर्थ ॥ संयम धर्म विना कुग
ति विषें जीव है ॥ सो संसखेद खिन्न होइ ॥ भटके है ॥
मूल ॥ संयमं विनु पडियं मइक्कु जाउ ॥ अर्थ ॥ संयम

२२ अपनी शक्ति प्रमाणा कर कीजिये है॥ कैसो कहें तपो
धर्म॥ बाह्याभ्यंतर दोय प्रकार है॥ अभ्यंतर छह
प्रकार बाह्य कर॥ और ऐसो बारह प्रकार है॥ मूल॥
ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणोउत्तम तपो धर्मांगाय नमः॥ अर्घ॥
ऐसे महान उत्तम तपो धर्म रूप अंग के निमित्त हमारो
नमस्कार होहु॥ मूल॥ नरभव पावेविणु तच्च मुणे
विणु॥ अर्थ॥ मनुष्य भव पाइकर स्वपर वस्तु कूं रूप
जानकर॥ मूल॥ खंचवि पंचिंदिय समनु॥ अर्थ॥
मनसहित पांचों इन्द्रियनको वसकर खेंचकर॥ मूल॥

यम धर्म जिनेश्वर देव जू कह्यो है॥ ऐसो अर्थ को
जिये॥ मूल॥ दुगाइस सो मन स्वर किरणु॥ अर्थ॥
फेर संयम धर्म है॥ दुर्गति रूप सरोवर के सोषवे
को सूर्य समान है॥ मूल॥ जेन भवारि विहु मुह
निउ॥ अर्थ॥ जा संयम धर्म कर महा विष महाभ
यानक संसार वैरी है सो हनो जाइ है॥ हनिये है॥ मू
ल श्लोक॥ द्वादशं विविधं चैव बाह्याभ्यंतर भेद
त॥ स्वयं सत्कपमारो म क्रियते धर्मवेदिभिः॥१॥
अर्थ॥ धर्म के जानने वाले सत्पुरुषों कर तप है सो

२३ नरके परिग्रह हैं ॥ १४ ॥ खेती करवो ॥ घर ॥ रूपो ॥
सोनों ॥ चौपद ॥ बैल ॥ घोड़ा ॥ आदि धान्य नाज ॥
॥ दासी ॥ दास ॥ १ ॥ अरगजा ॥ सुगंध ॥ वस्त्र ॥ बासन ॥ १
ए बाह्य परिग्रह ॥ १ ॥ इस भांत जो बाह्य अभ्यंतर ॥
चौबीस प्रकार परिग्रह छोड़िये ॥ सो तप धर्म कहि
ये ॥ मूल ॥ तंतउ जाहिं मयरु जि खंडिज्जइ ॥ अर्थ ॥
जहां काम को खंडिये जीतिये सो तप धर्म कहिये
॥ मूल ॥ तंत उजाहि गिरि कंदर निवासइ ॥ अर्थ ॥
जहां गिरि कंदरा विषै अतिशय कर ॥ अथवा मने

निवे उपपंड विसे गई थंडुवि ॥ अर्थ ॥ संसार भोग
शरीर सेती उदास भावरूप निर्वेद धर्मकर मंडित सहि
न होय सो भायमान होयकर ॥ बाह्यअभ्यंतर चौबी
स प्रकार परीग्रह छोड़कर ॥ मूल ॥ तउ किज्जइं उजा
ए विवणु ॥ अर्थ ॥ वनविषें जाइकर तप धर्म है सो
कीजिये ॥ मूल ॥ तंत उजह परीग्रह जं छंडिज्जई ॥
अर्थ ॥ राग ॥१॥ द्वेष ॥२॥ वेदभाव ॥१॥ मिथ्याभाव
क्रोध मान ॥१॥ माया ॥१॥ लोभ ॥१॥ हास्य ॥ रति ॥
अरति ॥ शोक ॥ भय ॥ जुगुप्सा ॥१॥ ये चौदह अभ्यं

तंतउ छसमिदि परपालनु ॥ अर्थ॥ जा विषे पांच
समित भले प्रकार पालिये सो तप धर्म कहिये ॥ मूल॥
तंत उ गुत्ति तियहि निहालगु ॥ अर्थ॥ तहां तीनों गुप
ते चलै नहीं नीके पालिये सो तप धर्म कहिये ॥ मूल॥
तंत उ जह अप्प परबुझई ॥ अर्थ॥ जहां निजात्मा को
वा पर को स्वरूप जानो सो तप धर्म कहिये ॥ मूल॥ तंत
उ जिह भउ माया जिउ भइ ॥ अर्थ॥ जहां संसार विषे
संसार तें उदास होई ॥ और मान कषाय छोड़िये ॥ सो
तप धर्म कहिये ॥ मूल॥ तंत उ जह कम्मह गुन बिज्झहै

श कर वसिए ॥ तिष्ठियें सो तप धर्म कहिये ॥ मूल ॥ तंत उज्जिहि उपसर्ग सहिज्जइ ॥ अर्थ ॥ जहां उपसर्ग को सहिये सो तप धर्म को कहिये ॥ मूल ॥ तंत उजह राग्या उज्जि निज्जई ॥ अर्थ ॥ जहां राग द्वेष मोहादिक को जीतिए ॥ तंत कहिये सो तउ कहिये तप धर्म कहिये है ॥ मूल ॥ तंत उजहि भिर कहिये भुंजिज्जइ ॥ अर्थ ॥ तहां जैन आम्नाय कर सहित योग्य परघर विषैं भिक्षा कर आहार के समै विधि पूर्वक भोजन कीजिये ॥ आहार कीजियें सो तप धर्म कहिये ॥ मूल ॥

हे सो भले प्रकार प्राप्त होइ है ॥ मूल ॥ बारह विहिन्न
व वरु ॥ अर्थ ॥ बारह प्रकार श्रेष्ठ तप है ॥ मूल ॥ सो
दुगाइय हहलु ॥ अर्थ ॥ दुर्गतिके नरक तिर्यंच गति
के मार्गकों रोके है रहे हैं ॥ मूल ॥ तं पुज्जिज्जइ थिरमणे
न ॥ अर्थ ॥ तिस तप धर्मको स्थिर मन कर पूजिये ॥
मूल ॥ मछर मउ छंडवि करनाई विदंडवि ॥ अर्थ
ईर्षा भाव है ताहि छोड़कर इंद्री हैं तिन्हैं वशीभूत
कर ॥ मूल ॥ तं पि धरिज्जइ गंवर वेरा ॥ अर्थ ॥ ऐसो
महान तप धर्म है ताहि अति आदर कर धारिये ॥ मू

॥अर्थ॥ जहां कर्म समूह कौ खिरबौ गिनबौ होइ सो तप धर्म कहिये ॥मूल॥ नंत उज्जइ सुर भत्तपयासहि ॥ अर्थ॥ जहां देव हैं ते भक्ति करे तपधान पुरुष की भक्त प्रवक जहां देव समूह हैं ते सेवा करें ॥ सो तप धर्म कहिए ॥मूल॥ पवयरा कुभावियराहि पवासहि ॥अर्थ॥ जहां भव्य समूह को शास्त्र अर्थ कहिये सो तप धर्म कहिये ॥मूल॥ जेरा तव केवल उपज्जइ ॥अर्थ॥ जा तप के प्रभाव कर केवल ज्ञान है ॥मूल॥ सासइ सुरकोन च संपज्जइ ॥अर्थ॥ और जा तप कर सास्वतौ सुष

२६ ग धर्म अंगके निमित्त हमारो नमस्कार है सो होउ
॥मूल॥ चाउवि धम्मं गो करहु अभंगो णियसत्ती
ए भत्तीए जाणाहु ॥अर्थ॥ भो भव्य जीव हो ते अप
नी सक्ति कर भक्ति पूर्वक अखंड भंग रहित त्याग
धर्म है ॥मूल॥ ताह पतहं सु पवित्त हो तव गुण
तयुतहं ॥अर्थ॥ तप अगणाकर सहित अति पवि
त्र पात्र हैं तिनके निमित्त करो॥ उत्कृष्ट पात्र के
निमित्त दान है ताहि देहु॥ कैसो कहे त्याग धर्म ॥
मूल॥ परिगई संवलतं मुंनहु ॥अर्थ॥ भो भव्य हे

ल।। चतुर्विधाय संघाय दानं चैव चतुर्विधं ।। दातव्यं सर्वदा सद्भिः श्चिंतकैः परलोकैको।।१।।

अर्थ।। परलौकिकैः चिंतकैः सद्भिः कहिये परभव सुधारवे के चिंतक सत्पुरुष है।। तिनकर चतुर्विधाय संघाय कहिये।। चार प्रकार दान है सो सर्वदा कहिये सर्वकाल विषैं एव कहिये निश्चय कर दातव्य कहिये देनो योग्य है सो सर्वदा कहिये।। सर्वकाल विषैं देनो योग्य है।। मूल।। ॐ ह्रीं परब्रह्मणे उत्तम त्यागं धर्मांगाय नमः।। अर्थ।। ऐसो महान त्या

र्म करिदान दीयेतें उत्कृष्ट भोग भूमके सुखहोहिदे
॥मूल॥ चाउविह उजइ रिणि चि जिविराये॥अर्थ॥ वि
नय पूर्वक दानसं त्यागधर्म है सो नित्य ही कीजियें
॥मूल॥ मुहवयण इभासे विनपरायं॥अर्थ॥ फेर
शुभ मिष्ट हित मित वचन बोलनेसंते अति नम्री भ
तहोइ करवा उत्कृष्ट पात्रके निमित्त दान दीजिये॥ मू
ल॥ अभय दान दिज्जइ॥ पहिलाउ॥अर्थ॥ प्रथ
मही सर्वोत्कृष्ट तें सर्वतें जे है॥ अभय दान है सो दी
जिये॥मूल॥ जिमनासयं परभवदुयारउं॥अर्थ॥

उत्कृष्ट पात्र के निमित्त दान देवे रूप त्याग धर्म है
ताहि परभव को खरची जानो ऐसो त्याग धर्म है
॥मूल॥ चाए आवागमनं हुदइ ॥अर्थ॥ त्याग
धर्म कर संसार विषैं भ्रमण रूप आवागमन है
सो दूर हो दूर होइ है ॥मूल॥ चाए निम्मल कित्तय
विदइ ॥अर्थ॥ त्याग धर्म कर निर्मल कीर्ति है ॥मूल॥
चाएं वइरय परा मयारां ॥अर्थ॥ त्याग धर्म कर
वैरी होंते पाइन परे है ॥ अंति नम्रीभूत होहि है ॥मूल
चायं भोह भ्रम मुह चांइय ॥अर्थ॥ फेर त्याग ध

दानदे वाकर धन और नाना २ प्रकार अरोद्ध है ते प्रवर्ते
है ॥ मूल ॥ चउ विह चाउ जिणह पविदइ ॥ अर्थ ॥ इभां
त चार प्रकार दान रूप चार प्रकार त्याग धर्म है सो प्रवर्ते
है ॥ मूल ॥ अह विदुहविय प्पह चाए ॥ अर्थ ॥ आप
का अशुभ विषय कषाय रूप दुष्ट संकल्प विकल्प
परनाम के त्याग धर्म होइ है ॥ मूल ॥ चाउ विए दुसन
दुसम चाए ॥ अर्थ ॥ संक्षेप कथोरई सेक धनकर क
हो त्याग धर्म नाहि जानो ॥ घत्ता मूल ॥ दुयह दिंजइदे
न ॥ अर्थ ॥ कर्मकर पीडितं दुःखी दीन अनाथ मारी है ॥

जा अभय दानके दियेते परभवके भयादिक दुःख हैंते नास को प्राप्ति होहिहैं ॥ मूल ॥ सत्थ दान विज्जउ पुरा किज्जइ ॥ अर्थ ॥ फेर दूसरो शास्त्रदान है सो सुपात्र के निमित्त कीजिये ॥ मूल ॥ निर्मल नाम जेन पाविज्जइ ॥ अर्थ ॥ जा शास्त्र के दान देवां कर निर्मल केवलज्ञान है ॥ मूल ॥ उसह दिज्जइ रोय विनासनु ॥ अर्थ ॥ जा औषधी दान है वाकर कदाच काल विषें व्याधके प्रकारा को हैव नहीं ॥ मूल ॥ आहारदं धंन अरइ पत्तहं ॥ अर्थ ॥ चौथे आहार

ग्रह भेदत: ॥ तस्य संख्या प्रकर्तव्या तृष्णा रहित
चेतसा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ बाह्याभ्यंतर भेद तें जो परिग्रह
चौवीस प्रकार है ॥ ता परिग्रह की मर्यादा है सो सं
तोषी पुरुष करनी योग्य है ॥ मूल ॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणो
उत्तम किंचिन्य धर्मांगाय नमः ॥ अर्थ ॥ ऐसे महान
आकिंचन धर्मांगके निमित्त हमारो नमस्कार है सो
होहु ॥ मूल ॥ आकिंचन भावहु ॥ अर्थ ॥ आकिंचन
धर्म हैं ताहू भावो ॥ ध्यानरूप करो कौन तरह ध्यान
मे ॥ ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर कहे हैं ॥ मूल ॥ अप्प उ

तिन्हें करुना बुद्धि कर दान है सो दीजिये ॥ मूल ॥ वि
ज्जइ माणा ॥ अर्थ ॥ जि गुण धारी हैं दर्शन ज्ञान चा
रित्र तप ॥ गुण के धारक सुपात्रों के सन्मान की
जिये ॥ और नित प्रसन्न नम्री भूत होइ ॥ चार प्रका
र दान है सो दीजिये ॥ मूल ॥ इय भाविय अभंगु हंस
णु चिंतिजई मणाहं ॥ अर्थ ॥ निरंतर सदा काल औ
व इया है सो भाइण सम्यग्दर्शन है सो अपने अं
तः करण विषे ॥ निरंतर चिंतवन कीजियें ध्याइ
ये ॥ १ ॥ मूल श्लोक ॥ चतुर्विंशति संख्यो तायो पा

३० सुहसंपराउ परम आतिंदिउ विगयभउ ॥ अर्थ ॥
सुखकर परिपूर्ण है ॥ उत्कृष्ट है ॥ इंद्रीगम्य नहीं
है ॥ भयकर रहित है ॥ सात भय में कोई भय डर
नाहीं है ॥ जहां ऐसो आत्मस्वरूप ध्याइये सो नि
श्चय आकिंचन धर्म कहिये ॥ मूल ॥ आकिंचणु
चउसगहणगिवि ॥ अर्थ ॥ बाह्य अभ्यंतर चौबी
स प्रकार परिग्रह को जे त्यागें सो आकिंचनुव्रत
कहियें ॥ मूल ॥ आंकिंचनवउ वियालि पमंम म
त ॥ अर्थ ॥ शरीरादिक विषें ममत्व कौ जो त्याग सो

षा॥ वउ॥ अर्थ॥ उस सर्व कर्म कलंक रहित निज
शुद्धात्मा है ताहि ध्यावो॥ चिंतवन करो कैसो करे
॥ अर्थ॥ आत्मा देई॥ मूल॥ भिराहु॥ अर्थ॥ देह
तें न्यारो है॥ मूल॥ णारा मउ॥ अर्थ॥ ज्ञान मयी
है ज्ञान शरीर है॥ मूल॥ निरुव मग यवराउ॥ अर्थ
ऐसो कोऊ उपमा नहीं जो आत्मा को दीजिये॥
तातें उपमा कर रहित है॥ फेर आत्मा है सो॥ सुपेत
कारो, पियरो, हरो, लाल, नहीं है॥ तातें पांच
वर्णकर रहित है॥ फेर कैसो कहे॥ आत्मा॥ मूल

ल॥ आकिंचनु जे भवसु विरत्त॥ अर्थ॥ संसार से
वंधी सुख से तो जो मन विरक्त होइ नहीं लगै सो
आकिंचन धर्म जानना॥ मूल॥ तिरामित्त परिग
हु जछ नछ॥ अर्थ॥ जहां तीन मात्र परिग्रह
नहीं सो आकिंचन धर्म कहिये॥ मूल॥ मनरा
उ विहज्ज उत्तवय वछ॥ अर्थ॥ मन को राग
तप रत विषें कीजौ॥ अथवा जहां मान करना
भाव छोड़िये॥ मन शुद्ध होय तिषियें सो आ
किंचन धर्म है॥ मूल॥ अप्पा परज छांवे पर

आकिंचनव्रत कहिये॥ मूल॥ आकिंचनु रयण
त्तउ पवित्त॥ अर्थ॥ रत्नत्रय कौ जो धारबो आव्रत
सो आकिंचन व्रत है॥ मूल॥ आकिंचणु आठवि
यइ चित॥ पसरंतउ॥ इंदि पवण विचित्त॥ अर्थ॥
इंद्री रूपी नाना प्रकार चित्र विचित्र वन विषैं पसरते
दौरते चलते॥ चित्त कौ जो आकिंचन सो आकिं
चनव्रत कहिये॥ मूल॥ आकिंचणु देहहु णेहु
चत्तु॥ अर्थ॥ शरीर साते स्नेह कौ ममत्व कौ मोह
कौ जो छोड़नो॥ सो आकिंचन व्रत कहिये॥ मू

भोजनको अनिष्ट जानिये भोजनस्पृहाईं
नहीं॥ ऐसो विचारिये सो आकिंचन धर्म
है॥ मूल॥ आकिंचन धर्म जो एम होई॥
अर्थ॥ इस भांत आकिंचन धर्म होइ है॥ मू
ल॥ तंभाइ ज्झाइ निरुइच्छ लोइ॥ अर्थ॥
ऐसो महान आकिंचन धर्म है सो भव्य जी
वों कर अतिशय कर इस लोक विषै ध्या
इये चिंतवन कीजिये॥ मूल घत्ता॥ एहु उंजि
यहाकुलहु महा बंइ तिंहै सरासिबनयैर

रत्त ॥ अर्थ ॥ जहां आतम स्वरूपको अथवाप
र जीवको स्वरूपको विचारवे रूप शक्ति होइ सो
आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥ परडिज्जइ जहां पर
मेडि भति ॥ अर्थ ॥ जहां पंच परमेष्टी भक्ति प
गट कीजिये सो आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥ जहां
छांडिज्जइ संकरा दुट्ट ॥ अर्थ ॥ जहां अशुभ
विषय कषाय रूप मन के दुष्ट संकल्प विक
ल्प छोड़िये सो आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥
भोजन बांछिजइ जहिं अनिट ॥ अर्थ ॥ जहां

पाल्यं शीलं संतोष धारिभिः॥ भेदाउभेदेन
संयुक्तं सद्गुण प्रसादतः॥१॥ संतोषधारी पु
रुषों करि सर्वकाल विषें सद्गुरु के प्रसादतें॥
भेदाभेदकर संयुक्त शीलव्रत है ताहि पालनो
योग्य है॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परम ब्रह्मण उत्तम ब्रह्म
चर्य धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसो महान ब्रह्म
चर्य धर्मांग के निमित्त हमारो नमस्कार होहु
॥मूल॥ ब्रह्म उड्डुड्डु रु धारिज्जइ वरु के डिज्ज
इ विसयासन रुज्झुडु॥ अर्थ॥ ब्रह्मचर्य व्रत है

गया॥ अर्थ॥ इस आकिंचन धर्म के प्रभावकर॥ अपने शुद्ध आत्मीक स्वरूप को प्राप्त होइकर॥ तीर्थंकर देवाधिदेव हुते॥ शिव नगर को प्राप्त भया॥ मूल॥ जे पुरुरिस सारा भय णवियारा विंदणिज्ज ते ते रा सया॥ अर्थ॥ फिर परम पूज्य श्रेष्ठ जे ऋषीश्वर भये और होइगे और अब होते सर्व ऋषीश्वर जिन मुद्रा धारकर तिस आकिंचनु धर्म कर संहित होइ॥ आकिंचन व्रतधारही के वंदनीक भये जगत्पूज्य भये॥ नवधा सर्वंग॥ मूल॥

३४ नि विषैं काम उपजे है ॥ तिस काम कर पीडित हुओ
संतो कार मूर्षे मारणी है ॥ अकार्य निंद नीक कार्य
करै है ॥ मूल ॥ तिंय हंसरीरइ निद्दई सेवई ॥ मूल ॥ रणा
य परणारिरा मढइ वेइय ॥ अर्थ ॥ स्त्रिया को निंद
नीक महां ॥ असुच शरीर को सेवै है ॥ काम कर आते
विहुल आतुर कार्य होयकर निज स्त्री और पर
स्त्री को नहीं जानै है ॥ मूल ॥ इयजाणो विणू मनु
वय काय ॥ अर्थ ॥ वंभ चेर पातहु अनुरांए
॥ अर्थ ॥ इस भांत नरक दुंख को जान मंन वचन का

सो अति दुरखों कर धरो जाइहै ॥ इस जगत पूज्य ब्रह्म श्रेष्ट ब्रह्म चर्य व्रत को धारिये ॥ और विषय कषायरूप आशा वांछा है सो अतिशय करि छोड़िये ॥ तिय सुरूपरत उमारीकर मत उतंजी बंभ हये दुथिर ॥ अर्थ ॥ स्त्रियों के मुख विषे रक्त आसक्त मदोन्मत्त मन हाथी है ताहि ज्ञान रूपी अंकुश कर वशीभूत कर परम उत्तम ब्रह्म चर्य व्रत है ताहि अत्यंत थिर करो ॥ मूल ॥ चित्त भूमि मयरा जिउ प्पज्जइ ॥ मूल ॥ तेरा जपीडि उकरं अप्पज्जई ॥ अर्थ ॥ चित्त भू

३५ जिने इश्वर देव जू कर विफल निफल कहे हैं ॥ मूल
बाहिर परसिव दियमुहरपहु ॥ मूल ॥ परम बंभं
तर पेरकहु ॥ अर्थ ॥ ब्राह्य स्पर्शन इंद्री के सुख को
छोड़ो ॥ और अपने अंतःकरन विषे अनंत द
र्शन ज्ञान सुख वीर्य मय निज आत्म रूप परब्रह्म
चर्य हेता हि ॥ एकाग्र दृष्टि करदेषो अवलोक
न करो ॥ भो परम ब्रह्म चर्य के धारक पुरुषोत्तम
हो ॥ मूल ॥ ए नववारो लम्बइ सिबहतु ॥ मूल ॥
इमर पद्धतहु भिराइ विनय सारु ॥ अर्थ ॥ इसन

य कर भो भव्य जीव हो तुम जे हो ते बड़ी प्रीति अ
नुराग कर ब्रह्मचर्य उत्तम रत्न है ताहि पालहु ॥
मूल ॥ णव पयार इत्थिय सुहयारउ ॥ बम्भे विणु
वउ तउ जि असारउ ॥ अर्थ ॥ नव प्रकार स्त्री संबंधी सुख को
त्याग और व्रत तप को पालबो सो और सर्व पुण्य
किया है ते ब्रह्मचर्य व्रत विना असार है अफल निः
फल है ॥ मूल ॥ ब्रह्मचर्य विनु कायकलेसइ ॥
मूल ॥ विफल सयल भासियहि जिणेसइं ॥ अ
र्थ ॥ ब्रह्मचर्य व्रत विना संफल काय क्लेश है ते भो

३५ पूर्वक अंग और मस्तक नवाइ नमस्कार कीजिये है
फेर अतिशयकार हंस कालिक धर्म है सो पालिये
॥मूल॥ भोखेमसीह सुयभव्व विनय अुय ॥मूल॥
होलीवम्वइहकारइपिर॥अर्थ॥ भोषेम सिंह सत
पुत्र भोभव्य भो विनय संयुक्त भो हो लि ऐसे नाम
धारिक पुरुषोत्तम तुम जु हो सो जुह उत्तम भव च
र्ये भ्रत जु है ताहि अति दुर्लभ इस मनुष्य जन्म वि
षें। अत्यंतादरकरों। अतिगाढो पालो॥मूल॥ इ
य काउन निज्जारं॥मूल॥ जे हरांतभव पंजरं॥

बवाड सहित सील व्रत पाले ॥ शिव मंदिर मो
क्ष मंदिर है ॥ सो ब्रह्म चारी पुरुषोत्तमो करपाइ
ये हैं ॥ इस प्रकार इस लक्षणीक जय माला के
कर्त्ता अति विनयवान् स्पष्ट है सो तुम विनयवा
न सत्पुरुष हो तिनको धर्मोपदेश रूप वचन कहे
है ॥ घत्ता मूल: जिण णाह मरिण जइ मुणिपण
विज्जई ॥ मूल ॥ इहलर कणु पालि जइ ॥ अर्थ ॥
जिन नाथ जो हैं तिन्हें पूजिये ॥ निर्ग्रंथ मुनि मह
राजों के मन वचन कांय कर नमोस्तु ऐसे विध

३७ मूल॥ खव मखव माउ॥ नूतुंगयदेहउ॥ मूल॥ मद्दव पल
व आर्जवसाहउ॥ अर्थ॥ कैसौ कहे धर्म रूपी रत्न क्षमा
कीजें पानि सो है॥ उचौ शरीर जाकोइ ऐसो है॥ फेर के
सो कहे॥ धर्म रत्न मार्दव धर्म रूपी पल्लव है॥ रूपलो
है जाके॥ ऐसो है॥ आर्जव धर्म रूपी बड़ी २ साषा है
॥ बड़े २ आला है जाके ऐसो है॥ मूल॥ सच्च स उच्च मल्ले
सयमदलु॥ मूल॥ दुविह महा तवनव कुसम मा वल
॥ अर्थ॥ फेर कैसो है धर्म रत्न सत्य धर्म और शौच
धर्म है मल्ल जाको॥ ऐसो है॥ फेर इंद्री संयम और

र्थ। इस भांत कर्मोंकी निर्जरा कर कर्म गालकर
और जे पुरुषोत्तम मनुष्य जन्म विषें संसार
रूपी पिंजरा है ताह हनै है तोरै है ॥ मूल ॥ रोगीरे
यं अजरामरं ॥ मूल ॥ ते लहंति सोंखयरं ॥ अर्थ
ते पुरुषोत्तम रोग रहित उत्कृष्ट सुख है ताह पा
वै है ॥ मूल ॥ जेण मोक्खफलं तं पाविज्जइ ॥ अर्थ
जा धर्म वृक्ष कर सो मोक्ष फल पाइये है ॥ मूल
सो धम्मं गिउ एह उगीरे जई ॥ अर्थ ॥ सो धर्म जं
हियं धर्म वृक्ष सुभांत उगईए ॥ उपजाइए ॥

पे यर सुहय फलु॥अर्थ॥ देवेंद्र नरेंद्र खेचरेंद्र संवंधी
सुखरूप महांमीठे फल अति सुंदर लगे हैं॥ फलो केसे
क राजा के ऐसो कहे॥ उत्तिम क्षमा सु धर्मरूपी रत्न॥
मूल॥ दीन नाह द्रोहस मारोगाह॥अर्थ॥ दीन अनाथ
बाध नहीं न बाधने खरी उपर किसं है। निरावर फलके
वी रूपसमा तुल्य अनुग्रह कृपा भाव जाकर ऐसो है॥
पूर्वोक्ति धर्म रत्न सुध सोभत नमित्त परिगाहु॥ सुद्ध
समता परनामरूप शरीर मात्र परिग्रह जाके ऐसो धर्म
रत्न॥मूल॥ बंभचेरत्ना याह सुहासिउ॥अर्थ॥ ब्रह्म

प्रारा संयम है सो मोटा पनो जाकें ऐसो है ॥ फेर कैसो
कहे धर्मरत्न ॥ बाह्यवाभ्यंतर बारह भेद सहित दोय
प्रकार तप रूपी है ॥ पुष्पों की पंक्ति जाकें ऐसा है धर्म
रत्न ॥ मूल ॥ चउविह चाउ पासरय पर मलु ॥ अर्थ ॥ चा
र प्रकार जो दान सोई फूल है पुष्पों की सुगंध जाविषें
ऐसो है धर्मरत्न ॥ मूल ॥ पीणिय भव्य लोय छप्पय
उलं ॥ अर्थ ॥ तिन पुष्पों की सुगंध कर पुष्ट करे है ॥ भ
व्य लोक रूपी भ्रमर समूह कर कैसे है ॥ कलकलारा-
व समूह जाविषें ऐसो धर्म रत्न ॥ मूल ॥ सुरनरषर

न भल्लारउ किज्जई ॥ अर्थ ॥ ध्यान अनुष्टान ध्यान-
आचरण रूप थांहलो कीजे। रक्षा को वा जलसो चको
आसपास मोदेवार कीजिये ॥ मूल ॥ मिथ्या मय रूप
वें सुरा दिज्जई ॥ अर्थ ॥ कुदेव कुशास्त्र कुगुरु की
प्रीत रूप वा सरीर सो आत्मा बुद्धि रूप मिथ्यात्व रूपी
मृग को हरिन को निकट आवने नहीं दीजिये ॥ प्रवेश
नहीं करन दीजिये ॥ मूल ॥ शील शरीर धराहिं सिंच अ
इ ॥ अर्थ ॥ सील रूप निर्मल नीर जल के धारों कर सीं
चिये ॥ मूल ॥ एम पयत्तइं वढारिज्जइ ॥ अर्थ ॥ इसय

चर्ये रूपसघन छायाको है ॥ सुं शुभ आश्रय जाके ऐ
सो है धर्म रत्न ॥ मूल ॥ रायहंस नियरे हि समासिउ
॥ अर्थ ॥ चक्रवर्त नारायण प्रति नारायण बलभद्र
मुकुटबंध राजा ओंके आदि दे बड़े २ राजा हंसों
कर लिये ॥ अति निकट आश्रय जाको ऐसो है धर्म
रत्न ॥ मूल ॥ यह उद्दम रुक लिर कज्जइ ॥ अर्थ ॥ जु
हु धर्म रत्न है सो धर्मात्मा भव्य जीवों कर लिखियें
जानियें ॥ मूल ॥ जीवदया बहुविध राखिज्जइ ॥ अर्थ ॥
जीवों की दया है सो बहु प्रकार राषिये ॥ मूल ॥ ज्ञानव

४० स मिरइ ॥ अर्थ ॥ फेर जुह धर्म वृक्ष है सो तीन जगत
वासी भव्य जीवोंको सो भायमान अति मीठे सदा
शाखतौ मुक्त रूपी फल को देइ है ॥ इति श्री दशलक्ष
णजयमाल टीका संपूर्ण समाप्त ॥ सं १९५२ मिती फा
गुन सुदी ९ शनिवार ह॰ नाथूराम जैनी • सागर

श्लोक ४७५

भकोरवा इस प्रकार करि उत्तम क्षमारूपी सुंदर धर्मवृक्षको बढ़ाइये ॥[illegible]॥ कोहानल चुक्कउ ॥अर्थ॥ क्रोधरूपी अग्नि सेंती बचे तो होइ गुरुक्कु उ ॥ अति बड़ो अति गरुव होइ ॥मूल॥ जाई रिसिंदहि सिट्ठ ॥ अर्थ॥ ऋषीस्वर जे सर्वकैं ऋषीस्वर वीतराग अर्हंत देव हैं ते इसि भांति कहे ते इस भांति कहे हैं ॥मूल॥ जगतांई सुक्करो रु ॥मूल॥ धम्ममहातरु ॥अर्थ॥ जुह धर्मरूपी महा श्रेष्ठ वृक्ष है सो तीनों जगतवासी भव्य जीवोंको सुरगकों कों कथावाला है ॥मूल॥ देइफलाइं